C-4

> Date ☐ Mon ☐ Tue ☐ Wed ☐ Thu ☐ Fri ☐ Sat ☐ Sun

## लिखित - भाषा के उपयोग से कक्षा में विषयों का उत्तम अधिगम।

आलेखीय भाषा (Graphi Language) का तात्पर्य लिखित भाषा से है। लिखित भाषा सरल होनी चाहिए और इस भाषा का प्रयोग करते समय जिनके लिए लिखी जा रही है उन पाठको का ध्यान रखना चाहिए।

अपने मन के भावों और विचारों को लिखकर व्यक्त करना लिखित भाषा कहलाता है।

लिखित भाषा के महत्व एवं उपयोगिता :-

1. साक्ष्यों का विकास संभव।
2. लम्बी दूरी के संचार में सम्भव उपयुक्त।
3. विस्तृत विषय वस्तु को प्रेषित करने में उपयुक्त
4. समय की बचत।
5. सामग्री की गोपनियता
6. ज्ञान का संरक्षण
7. संशोधन, सुधार एवं स्पष्टीकरण की संभावना
8. अभिलेखीय कार्य।
9. सामाजिक महत्व
10. भाषा को स्थायित्व देना
11. संस्कृति एवं सभ्यता का संरक्षण
12. रचनात्मक प्रवृत्तियों का विकास
13. साहित्यिक महत्व

. . . . . .

Scanned with CamScanner

* सामाजिक दृष्टि से उपयोगी :-

लिखित अभिव्यक्ति के दृष्टिकोण से सामाजिक जीवन में अपनी आवश्यकताओं को हम लिखित अभिव्यक्ति के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। जो व्यक्ति लेखन की कुशलता में प्रखर होता है वह सामाजिक दृष्टिकोण एवं व्यक्तिगत दृष्टिकोण से अपनी आवश्यकताओं को लिपिबद्ध करके उसे पूरा करने का प्रयास करता है - जैसे :- सामाजिक जीवन में लिखित अभिव्यक्ति के स्वरूप पत्र व्यवहार हिसाब-किताब के लिए अत्यन्त उपयोगी माना जाता है।

* भाषा को स्थायित्व प्रदान करना -

लिखित भाषा के माध्यम से भाषा को स्थाई रूप दिया जाता है। बोलना भाषा का अस्थायी रूप होता है। इसका उपयोग केवल विचारों को अमूर्त रूप देना होता है। अपने विचारों को आंतरिक रूप से प्रकट करने के लिए लिखित भाषा का उपयोग करना होता है।

* सभ्यता और संस्कृति का संरक्षण -

लिखित भाषा के माध्यम से हम बच्चों अपनी संस्कृति एवं सभ्यता को कायम रखने का ज्ञान दे सकते है। केवल अपने विचार संस्कृति के

Scanned with CamScanner

> Date

☐ Mon ☐ Tue ☐ Wed ☐ Thu ☐ Fri ☐ Sat ☐ Sun

अन्तः क्रिया में लिपिबद्ध करके इसका उपयोग आने वाली पीढ़ियों के लिए सम्भव हो पाता है।

* स्मरण दृष्टिकोण को सम्मुख करना —

सामान्यतः यह पाया जाता है कि मानव मस्तिष्क में बहुत सी बातों को केवल कुछ क्षण याद रखा जाता है। जीवन में भी कुछ पढ़ते हैं या कुछ सीखते हैं तो उसे स्मरण की दृष्टिकोण से स्थायी रखने में हम संक्षम नहीं हो पाते हैं उसे हम लिखित अभिव्यक्ति के माध्यम से आवश्यकतानुसार समय-समय पर उसका अवलोकन करते हैं।

* रचनात्मक प्रवृत्तियों का विकास करना —

लिखित भाषा के माध्यम से बातों की लेखन प्रक्रिया में रचनात्मक तत्वों का समावेश केवल लिखित रूप देकर ही सम्भव हो पाता है। परिणामस्वरूप रचनात्मक प्रक्रिया का प्रयोग करते समय उनमें जिज्ञासा को पूर्ण करने एवं लिखित अभिव्यक्ति के द्वारा प्रस्तुतिकरण करने में होता है। जो सम्भव हो पाता है।

Scanned with CamScanner

> Date

* **साहित्यिक विकास करना :-** लिखित भाषा के द्वारा शिक्षक अपने छात्रों में लिखावट, सोचने, तर्क-वितर्क करने, कम शब्दों में ज्यादा व्यक्त करने की क्षमता विकसित करना शिक्षक का दायित्व लिखित भाषा का विकास करना होता है।

इस भाषा के द्वारा बालक अपने निबन्ध लेखन, कविता लेखन, कहानी, उपन्यास, आदि लेखन का विकास किया जा सकता है।

* **विद्यार्थियों में अभिलेखी कार्य क्षमता का विकास करना -** छात्रों को कक्षा में लिखित भाषा का ज्ञान कराकर उनमें कार्यालयी भाषा अर्थात विद्यालय दफ्तर आदि अभिलेखी कार्य क्षमता में दक्ष किया जा सकता है। अभिलेखिय कार्य क्षमता से आशय, बच्चों में रोजमर्रा के क्रियाकलापों का सूचीबद्ध करना और अपने भविष्य को सुधारने का प्रयास करना आदि क्षमता विकसित करना है।

यदि बच्चे लिखित भाषा का विकास करके अपने आय-व्यय का लेखा जोखा करने की क्षमता का विकास हो जाता

> Date ☐ Mon ☐ Tue ☐ Wed ☐ Thu ☐ Fri ☐ Sat ☐ Sun

है तो बालक का उज्जवल भविष्य बन जायेगा।

* लिपि के ज्ञान के बिना बालक न तो शुद्ध वर्तनी का प्रयोग कर सकता है और न ही विचारों को लिखित रूप से अभिव्यक्ति कर सकता है।
* जब तक बालक को लिखना नहीं आ जाता तब तक उसका भाषा पर पूर्ण अधिकार नहीं हो सकता।
* लिखित भाषा विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने का एक महत्वपूर्ण साधन है।
* बौद्धिक विकास के लिए लेखन सीखन परम आवश्यक है।
* लिखित भाषा साहित्य भण्डार में वृद्धि करती है।
* संसार में हो रहे नये ज्ञान, विज्ञान से परिचित कराने के लिए मुख्य साधन लिखित भाषा ही है।

## लिखित भाषा कौशल के उद्देश्य

* छात्रों को लिपि, शब्द, मुहावरों आदि का ज्ञान कराना।
* छात्रों को शुद्ध वर्तनी, वाक्य रचना तथा विराम चिन्हों आदि का ज्ञान कराना।

Scanned with CamScanner

* छात्रों को सुन्दर स्पष्ट तथा सुडौल अक्षर लिखने में निपुण करना।
* छात्रों के शब्द कोष में वृद्धि करना।
* छात्रों में सृजनात्मक शक्ति का विकास करना।
* छात्रों में स्वतः लेखन क्रिया में रुचि उत्पन्न करना।
* छात्रों में भाषा और साहित्य के प्रति आदर का भाव जागृत करना।
* छात्रों को अनुलेख, प्रतिलेख, तथा श्रुतिलेख लिखने में निपुण बनाना।

## लेखन भाषा अधिगम की विधियाँ

① रूपरेखा अनुकरण विधि —

इस विधि में शिक्षक स्लेट, कापी या श्यामपट पर चॉक या पेंसिल से वर्ण लिख देता है छात्र उन लिखे वर्णों या निशानों पर पेंसिल या चॉक फेरता है जिससे शब्द या वाक्य उभर कर आ जाते हैं इस प्रकार बालक वर्णों का लिखना सीख जाता है।

② अनुकरण विधि :—